१०. प्राचीन भारत : सांस्कृतिक

१०.१ भाषा और साहित्य
१०.२ जनजीवन
१०.३ विज्ञान
१०.४ शिक्षा के केंद्र
१०.५ स्थापत्य और कला

१०.१ भाषा और साहित्य

प्राचीन भारत में साहित्य लेखन की अखंड परंपरा थी । साहित्य का यह लेखन संस्कृत, अर्धमागधी, पाली और तमिल भाषाओं में हुआ । उनमें धार्मिक साहित्य, व्याकरण ग्रंथ, महाकाव्य, नाटक, कथासाहित्य जैसे बहुविध लेखन का समावेश है ।

संघम (संगम) साहित्य : संघम (संगम) का अर्थ विद्‌वान साहित्यकारों की सभाएँ होता है । इन सभाओं में संकलित साहित्य 'संघम (संगम) साहित्य' के रूप में परिचित है। यह साहित्य तमिल भाषा में सबसे प्राचीन साहित्य है । इस साहित्य में 'सिल्लपदिकारम' और 'मणिमेखलई' प्रसिद्‌ध महाकाव्य हैं । संघम (संगम) साहित्य के माध्यम से दक्षिण भारत के प्राचीन समय के राजनीतिक और सामाजिक जीवन की जानकारी प्राप्त होती है ।

धार्मिक साहित्य : इस साहित्य में आगम ग्रंथ, तिपिटक और भगवद्‌गीता महत्त्वपूर्ण ग्रंथ हैं ।

'जैन आगम ग्रंथ' अर्धमागधी, शौरसेनी और माहाराष्ट्री जैसी प्राकृत भाषाओं में लिखे गए हैं । वर्धमान महावीर के उपदेश आगम ग्रंथों में एकत्रित किए गए हैं । अपभ्रंश भाषा में महापुराण, चरित्र, कथा आदि साहित्य पाया जाता है । सिद्‌धसेन दिवाकर ने न्यायशास्त्र से संबंधित 'सम्मइसुत्त' नामक ग्रंथ प्राकृत भाषा में लिखा । विमलसूरी ने 'पउमचरिय' नामक प्राकृत काव्य में रामकथा बताई है । हरिभद्रसूरी का 'समराइच्चकहा' और उद्‌योतनसूरी का 'कुवलयमालाकहा' ग्रंथ भी विशेष प्रसिद्‌ध हैं ।

क्या तुम जानते हो ?

उत्तर भारत से महाराष्ट्र तक के प्रदेशों में प्रचलित अधिकांश भाषाएँ प्राकृत तथा संस्कृत भाषाओं का विकसित रूप है । प्राकृत शब्द 'प्रकृत' शब्द से बना है । प्रकृत का अर्थ प्राकृतिक अथवा नैसर्गिक होता है । प्राकृत भाषाएँ लोगों के दैनिक व्यवहार में प्रचलित भाषाएँ थीं । प्राकृत भाषाओं का वर्गीकरण चार समूहों-पैशाची, शौरसेनी, मागधी और माहाराष्ट्री में किया जाता है । माहाराष्ट्री से मराठी भाषा विकसित हुई । इस प्रकार प्राकृत भाषाओं से मराठी जैसी आधुनिक भाषाओं का विकास हुआ । विकास होने की इस प्रक्रिया में इन भाषाओं के मूल स्वरूप में परिवर्तन हुए । उन्हें 'अपभ्रंश भाषाएँ' कहा गया । अपभ्रंश भाषाओं में से आधुनिक भाषाएँ विकसित हुईं ।

तिपिटक में तीन पिटक हैं । पिटक का अर्थ पेटी होता है । यहाँ उसका अर्थ 'विभाग' है । तिपिटक पाली भाषा में लिखे गए हैं । इसमें तीन अलग-अलग प्रकार के साहित्य समाविष्ट हैं ।

१. 'सुत्तपिटक' : इसमें गौतम बुद्‌ध के उपदेश वचनों को एकत्रित किया गया है । इन वचनों को सूक्त कहते हैं । **२. 'विनयपिटक' :** यहाँ 'विनय' शब्द का अर्थ 'नियम' है । इसमें बौद्‌ध संघ के भिक्खुओं और भिक्खुनियों को दैनिक जीवन में कैसा आचरण करना चाहिए; इसके नियम दिए गए हैं । **३. 'अभिधम्मपिटक' :** इसमें बौद्‌ध धर्म के दर्शन को समझाया गया है । तिपिटक की व्याख्या करनेवाला 'अट्‌ठकथा' (अर्थकथा) नामक ग्रंथ प्रसिद्‌ध है । विदुषियों ने अपने अनुभव बतानेवाली गाथाओं की रचना की है । उन गाथाओं को 'थेरीगाथा' नामक ग्रंथ में संकलित किया गया है । ये गाथाएँ पाली भाषा में हैं ।

हिंदुओं का पवित्र ग्रंथ 'भगवद्गीता' महाभारत का ही एक अंग है । भगवद्गीता में कहा गया है–

'फल की आशा न करते हुए अपना-अपना कर्तव्य करें ।' इसमें यह भी बताया गया है कि ईश्वर की भक्ति का मार्ग सब के लिए मुक्त है ।

ई. स. की आठवीं शताब्दी में आद्य शंकराचार्य हुए । उन्होंने ज्ञान और वैराग्य जैसी बातों पर बल दिया । साथ ही 'उपनिषदों' 'ब्रह्मसूत्रों' और 'भगवद्गीता' ग्रंथों पर भाष्य लिखकर उनका अर्थ स्पष्ट किया । उन्होंने भारत की चार दिशाओं-बदरीनाथ, द्वारिका, जगन्नाथपुरी और शृंगेरी स्थानों पर चार मठों की स्थापना की ।

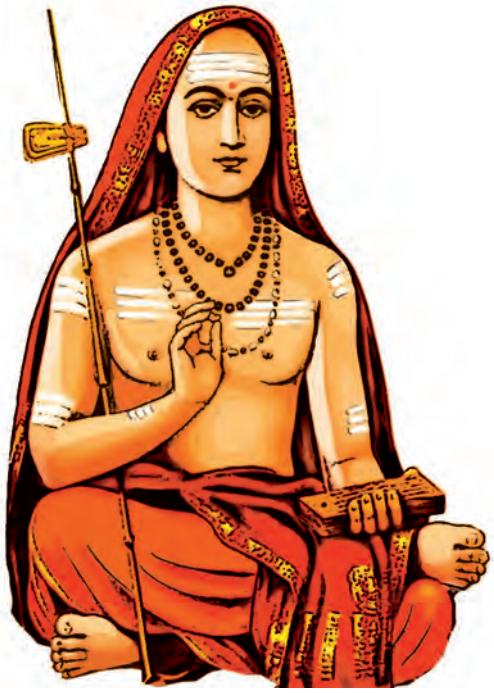

आद्य शंकराचार्य

कौटिल्य ने अर्थशास्त्र ग्रंथ लिखा । उत्तम शासन व्यवस्था कैसी होनी चाहिए, इसका विस्तृत विचार विमर्श कौटिल्य ने इस ग्रंथ में किया है ।

व्याकरण ग्रंथ : व्याकरणाचार्य 'पाणिनि' द्वारा लिखित 'अष्टाध्यायी' नामक ग्रंथ संस्कृत व्याकरण का प्रामाणिक ग्रंथ माना जाता है । पतंजलि ने 'महाभाष्य' ग्रंथ लिखा । इस ग्रंथ में पाणिनि द्वारा लिखित 'अष्टाध्यायी' ग्रंथ में दिए गए सूत्रों का स्पष्टीकरण किया गया है ।

क्या तुम जानते हो ?

अर्थशास्त्र : कौटिल्य ने अर्थशास्त्र ग्रंथ लिखा है । इस ग्रंथ में राजा के कर्तव्य, मंत्रियों को चुनने के निकष, प्रतिरक्षा प्रबंध, दुर्गों के प्रकार, सेना की संरचना, गुप्तचरों की योजना, कोष, कार्यालय की व्यवस्था, न्यायदान प्रणाली, चोरी की जाँच-पड़ताल करना, दंड के प्रकार आदि प्रशासन से संबंधित बिंदुओं पर सूक्ष्मता से विचार-विमर्श किया गया है ।

आर्ष और अभिजात महाकाव्य :

प्राचीन भारत के 'रामायण' और 'महाभारत' दो आर्ष महाकाव्य हैं । आर्ष का अर्थ ऋषियों द्वारा रची गई रचना है । 'रामायण' महाकाव्य वाल्मीकि द्वारा रचा गया है । रामायण की कथा के नायक श्रीराम हैं । 'महाभारत' महाकाव्य व्यास ऋषि द्वारा रचा गया है । कौरव और पांडव के बीच का युद्ध महाभारत का विषय है । इस महाकाव्य में श्रीकृष्ण के चरित्र का वर्णन मिलता है । महाभारत में विभिन्न मानवीय भाव-भावनाओं और उनके परिणामों के व्यापक दर्शन होते हैं ।

भाषा, साहित्य और कला की परंपरा में कोई कालखंड ऐसा भी होता है कि भविष्य में भी उसकी गरिमा और गौरव अबाधित रहते हैं । ऐसे कालखंड में निर्मित साहित्य, कला आदि को अभिजात साहित्य के रूप में जाना जाता है । अभिजात संस्कृत भाषा में कालिदास द्वारा रचित 'रघुवंश' और 'कुमारसंभव', भारवि द्वारा रचित 'किरातार्जुनीय' और माघ द्वारा रचित 'शिशुपालवध' प्राचीन कालखंड के ये महाकाव्य विख्यात हैं ।

नाटक : गायन, वादन और नृत्य के माध्यम से किसी कथा को प्रस्तुत करने की परंपरा भारत में बहुत पुरानी है । इन कलाओं की विस्तृत चर्चा भरतमुनि ने 'नाट्यशास्त्र' ग्रंथ में की है । संवादों के माध्यम से की जानेवाली इन कलाओं की प्रस्तुति को 'नाटक' कहते हैं । प्राचीन

संस्कृत नाटकों में भास नाटककार का लिखा 'स्वप्नवासवदत्त', कालिदास का लिखा 'अभिज्ञानशाकुंतल' जैसे अनेक नाटक विख्यात हैं ।

कथा साहित्य : प्राचीन समय में भारत में कथा साहित्य का उपयोग मनोरंजन द्‌वारा शिक्षा प्रदान करने के लिए किया जाता था । 'पैशाची' नामक भाषा में गुणाढ्‌य का लिखा 'बृहत्कथा' ग्रंथ प्रसिद्‌ध है । विष्णु शर्मा नाम के विद्‌वान द्‌वारा रचित 'पंचतंत्र' ग्रंथ कथासाहित्य का उत्कृष्ट नमूना है । इस ग्रंथ का अनेक भाषाओं में अनुवाद हुआ है । बौद्‌ध जातक कथाएँ भी विख्यात हैं ।

करके देखो ।

पंचतंत्र की कोई कहानी प्राप्त करो और उसका नाट्‌यीकरण करो ।

१०.२ जनजीवन

प्राचीन भारत के साहित्य द्‌वारा तत्कालीन जनजीवन की जानकारी प्राप्त होती है । प्राचीन भारत में देशांतर्गत और सुदूर देशों के साथ चलनेवाले व्यापार के कारण संपन्नता और समृद्‌धि का निवास था । समाज विभिन्न जातियों में बँटा हुआ था । विभिन्न कारीगरों और व्यापारियों के संगठन थे । उन्हें 'श्रेणी' कहते थे । व्यापार जलमार्ग और सड़क मार्ग से चलता था । मलमल के वस्त्र, हाथी दाँत, मूल्यवान रत्न, मसाले के पदार्थ, उत्कृष्ट बनावटवाले मिट्‌टी के बरतन आदि भारतीय वस्तुओं को विदेश में बड़ी माँग थी । चावल, गेहूँ, जौ, मसूर प्रमुख फसलें थीं । लोगों के भोजन में इन अनाजों से बने विभिन्न पदार्थ, मांस-मछली, दूध, घी और फलों का समावेश रहता था । लोग मुख्य रूप से सूती वस्त्रों का उपयोग करते थे । साथ ही रेशमी और ऊनी वस्त्र भी उपयोग में लाते थे । वे वस्त्र लगभग आज के वस्त्रों जैसे-धोती, उत्तरीय वस्त्र, साफा, साड़ी के समान थे । कुषाणों के कार्यकाल में वस्त्र सिलने की पद्‌धति से भारतीयों का परिचय हुआ ।

१०.३ विज्ञान

चिकित्सा विज्ञान : भारतीय वैद्‌यकशास्त्र को 'आयुर्वेद' कहा जाता है । आयुर्वेद की लंबी परंपरा रही है । आयुर्वेद में रोगों के लक्षण, रोगों का निदान, रोगों पर किया जानेवाला उपचार जैसी बातों का विचार किया गया है । साथ ही रोग न हों; इसके लिए क्या करना चाहिए; इसका भी विचार किया गया है । बिंबिसार के दरबार में 'जीवक' नाम का विख्यात वैद्‌य था । 'चरकसंहिता' ग्रंथ में चिकित्सा विज्ञान तथा औषधिविज्ञान की विस्तृत जानकारी दी गई है । यह ग्रंथ 'चरक' ने लिखा है । शल्यविशारद सुश्रुत द्‌वारा लिखित 'सुश्रुतसंहिता' ग्रंथ में विभिन्न रोगों का निदान और उपचारों की जानकारी प्राप्त है । इस ग्रंथ की विशेष बात यह है कि इसमें विविध कारणों से लगनेवाले घाव, हड्‌डियों का टूटना, उनके प्रकार और उनपर की जानेवाली शल्यक्रियाओं (ऑपरेशन) के प्रकारों पर विचार-विमर्श किया गया है । सुश्रुत संहिता का अरबी भाषा में अनुवाद हुआ था । उसका नाम 'किताब-ए-सुसुद' था । वाग्भट ने वैद्‌यकशास्त्र पर अनेक ग्रंथ लिखे । उनमें 'अष्टांगसंग्रह' और 'अष्टांगहृदयसंहिता' प्रमुख ग्रंथ हैं । बौद्‌ध भिक्खु सिद्‌ध नागार्जुन द्‌वारा लिखित 'रसरत्नाकर' ग्रंथ में रसायनों एवं धातुओं के विषय में जानकारी मिलती है ।

गणित और खगोल विज्ञान : प्राचीन भारतीयों ने गणित और खगोल विज्ञान विषयों का गहन अध्ययन किया था । १ से ९ और '०' (शून्य) संख्याओं का उपयोग सब से पहले भारतीयों ने किया । इन अंकों का मूल्य एकम, दहाई के स्थानानुसार बदलता है; यह प्राचीन भारतीयों को मालूम था । आर्यभट नामक वैज्ञानिक ने 'आर्यभटीय' ग्रंथ लिखा था । उसने गणितीय क्रियाओं के अनेक सूत्र दिए । आर्यभट खगोल विज्ञानी भी था । उसने कहा, पृथ्वी सूर्य के चारों ओर परिक्रमण करती है । ई. स. छठी शताब्दी में वराहमिहिर ने 'पंचसिद्‌धांतिका' नामक ग्रंथ लिखा । उसमें भारतीय खगोल विज्ञान के सिद्‌धांतों के साथ-

साथ यूनानी, रोमन और इजिप्शियन संस्कृतियों में पाए जानेवाले खगोल विज्ञान के सिद्धांतों का विचार भी किया गया है । ई. स. सातवीं शताब्दी में हुए गणितज्ञ ब्रह्मगुप्त के लिखे ग्रंथ का अरबी भाषा में अनुवाद किया गया ।

क्या तुम जानते हो ?

कणाद : कणाद ने ''वैशेषिक दर्शन' नाम का ग्रंथ लिखा । इस ग्रंथ में प्रमुखता से 'अणु-परमाणु का विचार किया गया है । कणाद के विचारानुसार यह विश्व असंख्य वस्तुओं से भरा हुआ है । इन वस्तुओं से तात्पर्य अणु द्वारा धारण किए हुए विभिन्न रूप हैं । ये रूप बदलते जाते हैं परंतु अणु अक्षय रहते हैं ।

१०.४ शिक्षा के केंद्र : प्राचीन भारत में शिक्षा के बहुतायत ख्यातिप्राप्त केंद्र थे । वहाँ शिक्षा प्राप्त करने के लिए विदेशों से भी छात्र आते थे ।

तक्षशिला विश्वविद्यालय : तक्षशिला प्राचीन भारत के व्यापारिक मार्ग पर महत्त्वपूर्ण स्थान था । यह स्थान अब वर्तमान पाकिस्तान में है । वहाँ पाए गए पुरातत्त्वीय प्रमाण के आधार पर दिखाई देता है कि तक्षशिला नगरी ईसा पूर्व छठी शताब्दी में बसाई गई थी । गौतम बुद्ध के समकालीन जीवक नाम के वैद्य ने तक्षशिला विश्वविद्यालय में शिक्षा ग्रहण की थी।ईसा पूर्व चौथी शताब्दी में तक्षशिला विश्वविद्यालय की कीर्ति दूर-दूर तक फैली हुई थी । मौर्य साम्राज्य का संस्थापक चंद्रगुप्त मौर्य की शिक्षा तक्षशिला विश्वविद्यालय में हुई थी । व्याकरणाचार्य पाणिनि, वैद्य चरक भी तक्षशिला विश्वविद्यालय के ही विद्यार्थी थे । सिकंदर के साथ आए हुए यूनानी इतिहासकारों ने भी तक्षशिला का उल्लेख किया है । उन्होंने लिखा है कि यूनान में कहीं भी ऐसा विश्वविद्यालय नहीं है । चीनी बौद्ध भिक्खु फाहियान लगभग ई. स. ४०० में भारत में आया था । उस समय वह तक्षशिला विश्वविद्यालय भी गया था । इस विश्वविद्यालय में वैदिक साहित्य, बौद्ध दर्शन, अर्थशास्त्र, तर्कशास्त्र आदि विभिन्न विषयों की शिक्षा प्रदान की जाती थी ।

वाराणसी : वरणा और असि नदियाँ गंगा की सहायक नदियाँ हैं । इन दो नदियों के बीच बसे हुए शहर को वाराणसी नाम प्राप्त हुआ । प्राचीन समय से वेदों तथा जैन और बौद्ध दर्शनों की शिक्षा प्रदान करनेवाले केंद्र वाराणसी में थे ।

वलभी : गुजरात के सौराष्ट्र में वलभी नामक प्राचीन नगर था । ई. स. पाँचवीं से आठवीं शताब्दी में वह जैन और बौद्ध दर्शन का महत्त्वपूर्ण शिक्षा केंद्र था। युआन श्वांग और इत्सिंग नामक चीनी बौद्ध भिक्खु वलभी में आए थे ।

नालंदा विश्वविद्यालय : वर्तमान बिहार के पटना शहर के निकट प्राचीन नालंदा विश्वविद्यालय के अवशेष हैं । इस विश्वविद्यालय को हर्षवर्धन ने उदारमना से दान किया था । युआन श्वांग और इत्सिंग ने इस विश्वविद्यालय का वर्णन किया है । उस वर्णन के अनुसार नालंदा विश्वविद्यालय में

नालंदा महाविहार की मुद्रा

हजारों विद्यार्थियों के रहने की सुविधा थी । विश्वविद्यालय के ग्रंथालय में हजारों ग्रंथ थे । यहाँ प्रवेश पाने के लिए विद्यार्थियों को प्रवेशद्वार पर परीक्षा देनी पड़ती थी ।

विक्रमशीला विश्वविद्यालय : वर्तमान बिहार के भागलपुर के निकट विक्रमशीला विश्वविद्यालय था । ई. स. आठवीं शताब्दी में धर्मपाल नामक राजा ने इसकी स्थापना की । वहाँ छह विहार थे । प्रत्येक विहार का स्वतंत्र प्रवेश द्वार था ।

कांची : पल्लव राजसत्ता के समय में (ई. स. छठी शताब्दी) वर्तमान तमिलनाडु में कांची शहर शिक्षा का महत्त्वपूर्ण केंद्र था । वहाँ वैदिक, जैन और बौद्ध ग्रंथों का अध्ययन और अध्यापन किया जाता था ।

१०.५ स्थापत्य और कला

मौर्य और गुप्त के कार्यकाल में भारतीय स्थापत्यकला का विकास चरमसीमा पर था । सम्राट अशोक द्वारा विभिन्न स्थानों पर निर्मित पाषाण (पत्थर) के स्तंभ भारतीय शिल्पकला के उत्तम उदाहरण हैं । सांची के स्तूप तथा उदयगिरी खंडगिरी कार्ले, नाशिक, अजिंठा (अजंता), वेरुल (एलोरा) आदि स्थानों पर निर्मित गुफाओं के माध्यम से वही परंपरा अधिकाधिक विकसित होती गई ; यह दिखाई देता है । गुप्त कार्यकाल में भारतीय मूर्तिकला का विकास हुआ । दक्षिण भारत में चालुक्य और पल्लव राजसत्ताओं के कालखंड में मंदिर स्थापत्य

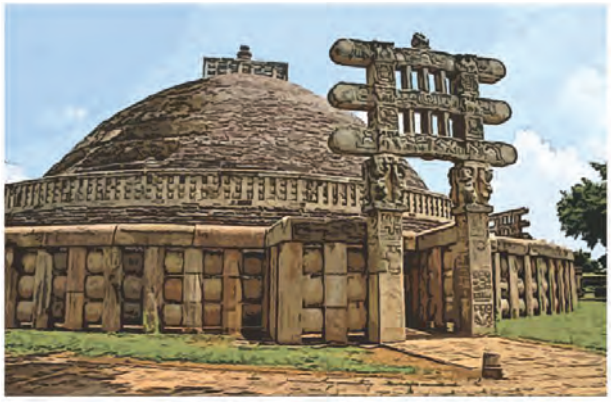

सांची स्तूप

का विकास हुआ । इसके प्रमाण महाबलिपुरम के मंदिर हैं । पल्लव राजसत्ता के कालखंड में कांस्य धातु से देवी-देवताओं की मूर्तियाँ बनाना प्रारंभ हुआ । दिल्ली के समीप महरौली में गुप्तकालीन लौहस्तंभ के आधार पर प्राचीन भारतीयों का धातुविज्ञान विषयक ज्ञान कितना उन्नत था ; इसका बोध होता है ।

हमने देखा कि प्राचीन भारतीय संस्कृति अत्यंत समृद्ध एवं उन्नत थी । अगले पाठ में हम भारतीय संस्कृति और विश्व की अन्य संस्कृतियों के बीच हुए संपर्क तथा उसके दूरगामी परिणामों का परिचय प्राप्त करेंगे ।

नटराज की कांस्यमूर्ति

महरौली का लौहस्तंभ

स्वाध्याय

१. निम्न प्रश्नों के उत्तर एक-एक वाक्य में लिखो :

(१) प्राचीन भारत के विश्वविद्यालयों की सूची बनाओ ।

(२) प्राचीन भारत की किन-किन वस्तुओं की विदेशों में माँग थी; उनकी सूची बनाओ ।

२. नाम लिखो :

प्राचीन भारत के महाकाव्य .....

३. (अ) रिक्त स्थान में उचित शब्द लिखो :

(१) रामायण महाकाव्य ..... ऋषि द्वारा रचा गया है ।

(२) भारतीय वैद्यक शास्त्र को ..... कहते हैं ।

(३) हजारों विद्यार्थियों के रहने की सुविधा ..... विश्वविद्यालय में थी ।

(ब) संक्षेप में उत्तर लिखो :

(१) तिपिटक किसे कहते हैं; स्पष्ट करो ।

(२) भगवद्गीता में क्या संदेश दिया है ?

(३) आयुर्वेद में किन-किन बातों पर विचार किया गया है ?

(४) संघम (संगम) साहित्य किसे कहते हैं ?

४. विचार-विमर्श करो :

मौर्य और गुप्त कालखंड में स्थापत्य और कला ।

५. तुम क्या करोगे ?

(१) आयुर्वेदिक उपचारों के विषय में जानकारी प्राप्त करके तुम अपने दैनिक जीवन में उसका किस प्रकार उपयोग करोगे ?

(२) अपनी पाठ्यपुस्तक में सांची स्तूप का निरीक्षण करो और उस विषय में घर के लोगों से जानकारी प्राप्त करो ।

६. निम्न प्रसंग में तुम क्या करोगे ?

तुम सैर पर गए हो । वहाँ के ऐतिहासिक स्मारक पर तुम्हारा मित्र अपना नाम लिख रहा है ।

उपक्रम :

(१) अपने परिसर में कौन-कौन-से विशेष वास्तु/भवन पाए जाते हैं; इस विषय में घर के लोगों से जानकारी प्राप्त करो ।

(२) अपने समीप के क्षेत्र/परिसर में पाए जानेवाले स्मारकों, भवनों की सैर पर जाओ तथा लिखो कि उनके द्वारा कौन-सा इतिहास तुम्हें मालूम होता है ।

* * *

नाशिक की गुफा